संगीत त्रिवेणी

(गायन-वादन-नर्तन)

उत्तर भारतीय संगीत (गायन, वादन, नृत्य) के विविध आयाम

डॉ. आनंद तिवारी
प्राचार्य/संरक्षक

डॉ. हरिओम सोनी
सम्पादक

डॉ. अपर्णा चाचोंदिया
सम्पादक

आयोजक-संगीत एवं नृत्य विभाग

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय सागर (म.प्र.)

प्रकाशक : रागी पब्लिकेशन एण्ड इंटरप्राइजेज
चैतन्य हास्पिटल के पास में, सैनी के कुआँ के सामने,
वृन्दावन वार्ड, तिली रोड, सागर (म.प्र.)
ई मेल : ragipublicationandenterprises@gmail.com
सम्पर्क : 9039515004

प्रकाशन वर्ष : 2023

संस्करण : प्रथम

मूल्य : 300/–

सम्पादक मंडल :
डॉ. हरिओम सोनी
डॉ अपर्णा चाचोंदिया

Book Name-Sangeet Triveni
ISBN.No.-978-93-340-4240-5

अक्षर संयोजन एवं मुद्रण
रॉयल कम्प्यूटर्स,
वनवे परकोटा रोड, सागर (म.प्र.)
मो. : 9425452106

नोट–प्रस्तुत प्रोसिडिंग में शामिल किये गए समस्त शोध पत्रों की सामग्री एवं तथ्यों की सम्पूर्ण जबाबदारी लेखकों की होगी इस हेतु सम्पादक या समिति किसी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होगी।

अनुक्रमणिका

क्र	विषय	पृष्ठ
1.	भारतीय राग चिकित्सा – समालोचनात्मक विश्लेषण **डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तोमर**	01
2.	नृत्यकला एवं रासलीला **डॉ. अपर्णा चाचोंदिया**	07
3.	वर्तमान परिवेश में संगीत घरानों की प्रासंगिकता **डा. प्रेम कुमार चतुर्वेदी**	11
4.	विकसित अवनद्य वाद्य – तबला (एक दृष्टिपात) **डॉ. विभूति मलिक**	17
5.	नृत्य कला में नायिका भेद **प्रो. डॉ. नीता गहरवार**	22
6.	संगीत में घराने – गुण एवं दोष **प्रो. डॉ. अलकनंदा पलनीटकर**	26
7.	गुप्त कालीन संगीत, गायन एवं वादन **प्रॉफसर नवीन गिडियन**	30
8.	बंदिश एवं नवसृजन पंडित देवेन्द्र वर्मा	34
9.	हिन्दी के गीतों में संगीत **डॉ. नरेन्द्र सिंह ठाकुर,**	43
10.	देश के सामाजिक आर्थिक विकास में संगीत कलाकारों की भूमिका **प्रोफेसर नित्यानंद चौधरी**	46
11.	प्राचीन ताल पद्धति का विश्लेषणात्मक विवेचन **डॉ. गुलशन सक्सेना**	51
12.	ताल के दस प्राण **हरविंदर बीर कौर**	55
13.	संगीत, संस्कृति और समाज **डॉ. मालती दुबे**	59
14.	संगीत कला का व्यवसायीकरण **डॉ. प्रियंका शेण्डे**	61
15.	कत्थक नृत्य में नायिकाओं की अष्टावस्था **प्रो. वन्दना चौबे**	65

16. कला का व्यवसायीकरण और सोशल मीडिया की भूमिका 72
एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
डॉ. रश्मि शर्मा

17. संगीत संस्कृति और समाज 78
डॉ. डी.के. गुप्ता

18. मानव जीवन में संगीत और स्वास्थ्य 80
श्रीमती रागिनी श्रीवास्तव

19. भारतीय संगीत के विविध आयामों में महिलाओं की स्थिति और भूमिका 84
प्रीति वर्मा

20. विभिन्न संगीत शैलियों के साथ विभिन्न तालों का सामांजस्य 88
शैलेन्द्र सिंह राजपूत

21. संगीत में अवनद्ध वाद्यों का विकास एवं महत्व संदर्भ–तबला 92
शैलेन्द्र वर्मा/डॉ. रवि कुमार पण्डोले

22. भारतीय संगीत गायन के विविध आयाम 96
डॉ. जितेन्द्र कुमार शुक्ला

23. हिन्दी साहित्य में चौमासा (आषाढ़, सावन, भाद्रपद, अश्विन) 100
लोक, ललित का मूल आधार
राघवेन्द्र प्रताप सिंह/डॉ. सुजीत देवघरिया

24. युवा पीढ़ी का पाश्चात्य संगीत की ओर रूझान 106
कृष्ण कुमार कटारे

25. महिलाओं से संबंधित मनोविकारों के निवारण में 108
संगीत चिकित्सा की प्रासंगिकता
वर्षा मीणा/डॉ. संतोष मीणा

26. भारतीय रंगमंच का स्वरूप एवं सांस्कृतिक परंपरा 114
अंजलि वर्मा

27. तबले की उपशास्त्रीय वादन शैली 117
डॉ राहुल स्वर्णकार

28. बुन्देली लोकगीतों में सांस्कृतिक चेतना 123
डॉ. सरिता जैन

29. मनोचिकित्सा में संगीत का प्रयोग 125
डॉ. हरीश वर्मा

30. अभ्यास एवं साधना (आध्यात्मिक अध्ययन) 128
आकाश जैन

31. सितार वादन करने हेतु तकनीक का महत्व–एक अध्ययन 132
डॉ. अमनदीप कौर

32. शास्त्रीय संगीत, नृत्य में रोजगार के अवसर 138
गरिमा भार्गव

33. कथक नृत्य की धार्मिक एवं आध्यात्मिक पृष्ठभूमि 140
डॉ. योगिता मंडलिक

34. धार्मिक पृष्ठभूमि पर अवस्थित नृत्यकला 142
कल्पना कुमारी

35. उत्तर भारतीय संगीत (गायन, वादन, नृत्य) 146
के विविध आयाम संगीत, संस्कृति और समाज
अनुराग गुरु

36. मध्यभारत के प्रमुख जनजातीय नृत्यों में अवनध वाद्यों की भूमिका 149
सरगम खान

37. संगीत संस्कृति और समाज 154
अमोल शेषराव गवई

38. संगीत और साहित्य का अंर्न्तसंबंध 156
सत्येंद्र सिंह पटेल

39. धार्मिक पृष्ठभूमि पर अवस्थित नृत्यकला कथक नृत्य एवं ईश्वर उपासना 159
सुश्री योगिता सरोया

40. विभिन्न ग्रंथों में वर्णित अवनद्य वाद्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन 161
तेजस पटैल

41. कथक नृत्य प्रस्तुति में आहार्य अभिनय 166
डॉ. संगीता ठाकुर

42. भारतीय शास्त्रीय नृत्यों में प्रयोगधर्मिता कथक नृत्य के संदर्भ में 169
डॉ. अमित साखरे

43. संगीत, संस्कृति एवं समाज 172
डॉ. रविन्द्र कुमार ध्रुवे

44. संगीत का स्वास्थ्य में योगदान 174
पायल कुमारी

45. कथक नृत्य प्रदर्शन में तुलसीकृत रचनाओं की उपादेयता 177
सुश्री रेखा मालवीय

46. ताल के दस प्राण 180
डॉ. कृष्णा बाला सिंह

47. धार्मिक पृष्टभूमि पर अवस्थित कथक नृत्य 185
डॉ नरेन्द्र कुमार ध्रुव

48.	गुप्त कालीन नृत्य एवं अभिनय **डॉ. अंजलि दुबे**	188
49.	मार्ग और देशी संगीत कलाऐं **विशाखा तिवारी मिश्रा**	191
50.	तबला स्वतंत्र वादन में गत वादन का स्वरुप एवं महत्व (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन) **गगन राज/आकाश जैन**	196
51.	संगीत के अध्ययन–अध्यापन में ई–संसाधनों की भूमिका **मितेन्द्र सिंह सेंगर**	200
52.	New teaching policy 2020 and today's student with music subject **Dr. HARIOM SONI**	206
53	CHEMISTRY BEHIND THE MUSIC **Dr. A.H. Ansari**	208
54.	The Dynamism of Indian painting under the patronage of the Mughals **Dr. Ashish Kumar Chachondia**	211
55.	Interrelation between music and chemistry: An Overview **Dr. Santosh Narayan Chadar**	215
56.	Music and Mental Health **Mayuresh Namdeo/ Dr. Santosh Kumar Gupta**	219
57.	Creativity in Choreography by Kumudini Lakhia, an Initial Journey **Jayti Brahmbhatt / Prof. Vandana Chaubey**	225
58.	DANCE BASED ON RELIGIOUS BACKGROUND **Kavisha Sabharwal**	228
59.	Personality Development and Employment Prospects Through Classical Dance **Mrs. Manjusha Rajas Johari / Prof. Vandana Chaubey**	232
60.	Use of music in EFL [English as a foreign language] **Mrs. Vibha Soni**	235
61.	Contribution of Women in Dance **Arshdeep Kaur Bhatti**	237
62.	Utility of Music in Indian Society **Priyam Chaturvedi**	241
63.	Music as an incredible medicine: A cure for wide range of diseases and disorders **Vaishali Prajapati**	245
64.	Psychology and Music Therapy **Koustubh Pare**	251
65.	The Importance of Music Education in India **Vishal V. Korde**	254
66.	Ten Elements of Taal (Taal Ke Das Pran) **Sompura Krupal Chetanbhai**	259

संगीत संस्कृति और समाज

डॉ. डी.के. गुप्ता

प्राध्यापक, वाणिज्य, शास. कन्या महाविद्यालय सागर

संगीत संस्कृति और समाज ये सभी एक–दूसरे के पूरक हैं। अतः संस्कृति समाज एवं संगीत में परस्पर घनिष्ठ संबंध है। विद्वानों ने कहा है कि दो या दो से अधिक मनुष्यों के पारस्परिक व्यवहार के आदान–प्रदान को समाज कहते हैं। एक ओर से व्यवहार को समाज नहीं सकते हैं। जब अनेकों व्यक्ति एक स्थान पर एकत्र होते हैं तो उनमें परस्पर गाने–बजाने, खुशी मनाने के भाव प्रायः देखने को मिलते हैं। साधारणतः लोगों में वह भ्रम है कि केवल गायन को ही संगीत कहते हैं, जबकि वास्तव में गायन–वादन और नृत्य के सभी प्रकारों को ही संगीत कहा जायेगा। संगीत (गायन) जो कि आम व्यक्तियों के उपयोग में आता है, उसके विभिन्न स्वरूप हैं जैसे – लोक संगीत, सुगम संगीत, समूह संगीत, व्यक्तिगत् संगीत इत्यादि। इसके अतिरिक्त शास्त्रीय गायन की भी अनेकों विधायें होती हैं। इसी प्रकार से वादन एवं नृत्य की भी अनेकों विधायें होतीं हैं जो कि समाज पर अपना प्रभुत्व रखती हैं।

समाज और संगीत का परस्पर घनिष्ठ संबंध है। कोई भी सामाजिक कृत्य बिना सांगीतिक उपयोग के कदापि सम्पन्न नहीं होते हैं। जब भी समाज में व्यक्ति एकत्र होते हैं तो उनमें संगीत का भरपूर प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिये लेडीज क्लब को लें या कोई भी अन्य क्लब को ही लें सभी में अनिवार्यतः संगीत का उपयोग होता है।

जहां तक सवाल है शास्त्रीयता का; तो मेरा विचार है कि जहां भी जिस रूप में भी संगीत है तो उसमें शास्त्रीयता अवश्य छिपी रहती है। भले ही उपयोग करने वाला न समझ सके किन्तु शास्त्रीयता तो है ही। जैसे हम कह सकते हैं कि घर–घर में महिलाएं गीत गाती हैं एवं उन गीतों के ढोलक आदि वाद्य भी लय, ताल में बजातीं हैं। उन्हें नहीं मालूम कि वे जो गा रही हैं, उनमें शास्त्रीयता कहां व कैसे हैं? किन्तु जब हम उन्हीं गीतों को स्वर में निबद्ध कर दें तो हम पायेंगे कि वह गीत सात शुद्ध व पांच विकृत स्वरों के अंदर ही होगा। यदि हम उस गीत के नोटेशन का अध्ययन–मनन् करेंगे तो हम देखेंगे कि उनका वह गीत किसी न किसी राग में आबद्ध होगा। उस गीत के साथ बजने वाली ढ़ोलक में भी किसी न किसी ताल की मात्रायें एवं बोल निकल रहे होंगे। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि शास्त्रीय संगीत का समाज पर अच्छा प्रभाव पड़ता है, तभी समाज उसका उपयोग करता है। जब वाद्ययंत्र से संगीत ध्वनियां निकलतीं हैं और शरीर की ध्वनियों से टकराती हैं तो इस संघर्षण और सम्मिलन से मनुष्य का अन्तर्मन संगीतमय हो जाता है। इन तरंगों में असाधारण शक्ति होती है। अनुसंधानों से यह पता लगा है कि ध्यान के समान संगीत हमारे अंदर भावनाओं को जगाता है।

आज संगीत के माध्यम से व्यक्तियों की मनोवृत्ति में परिवर्तन अनुनयात्मक संप्रेषण की सहायता से तथा व्यक्तियों में निहित पूर्वाग्रह विभेदन को कम करने में, राष्ट्रीय एकता बनाने में सहायक है। संगीत

एक ऐसा जादू है जिस पर धर्म, वर्ग तथा जाति का प्रभाव नहीं पड़ता। आधुनिक समय में संगीत की महत्ता भारतीय समाज व उसकी नैतिकता, संस्कृति, सामाजिक मानकों, रीति–रिवाजों तथा परम्पराओं के संरक्षण व व्यवस्थापन में सुनहरे काल के रूप में अपनी पहचान स्थापित करता जा रहा है।

मानव एकता और आनंद का प्रतीक होता है। समाज में किसी श्रेष्ठ व्यक्ति का सम्मान समारोह हो, रामलीला, रासलीला, नाटक, नौटंकी आदि का आयोजन हो तो बिना संगीत (गायन–वादन–नृत्य) के उपयोग किये सब कुछ अधूरा एवं फीका–फीका लगता है। भीड़ को बांधे रखने का एकमात्र साधन संगीत ही होता है। हम देखते हैं कि सभी राष्ट्रीय पर्व के आयोजनों में गीत–संगीत एवं नृत्य का भरपूर उपयोग किया जाता है।

समाज विभिन्नता से ही बना होता है। संप्रदायों एवं विचारधाराओं में विभिन्नता होने के बावजूद भी शास्त्रीय संगीत समाज में एकता स्थापित करने में मददगार सिद्ध हुआ है। एक मंच पर एक ही कार्यक्रम में गायक हिन्दू, तबला वादक मुस्लिम, हारमोनियम वादक जैन तथा तानपूरे पर सरदार जी बैठे मिल सकते हैं। तात्पर्य यह है कि भले ही धर्म एवं जाति अलग हों लेकिन शास्त्रीय संगीत रूपी समाज में सब एक हो जाते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि समाज में एकता और भाईचारा स्थापित करने में शास्त्रीय संगीत एक सार्थक एवं महत्वपूर्ण साधना है। शास्त्रीय संगीतज्ञ को समाज में अत्यन्त सम्मान से देखा जाता है। कलाकार की कठोर साधना, लगन एवं परिश्रम ही समाज में उसे सम्मान दिलाती है। समाज पर संगीत का प्रभाव किसी से छिपा नहीं है।